जैन दर्शन समिति

सादर प्रकाशनार्थ
स्मृति सभा

16/C, Dover Lane, Kolkata- 700 029.

प्राकृत भाषा के अधिकृत विद्वान प्रोफ़ेसर डॉ सत्य रंजन बनर्जी नहीं रहे|

कोलकाता: 02.01.2017

प्राकृत भाषा के अधिकृत विद्वान प्रोफ़ेसर डॉक्टर सत्य रंजन बनर्जी का निधन 10 दिसंबर 2016 को प्रातः 7:00 बजे 87 वर्ष की अवस्था में लगभग 1 माह की अस्वस्थता के बाद कोलकाता में हो गया।

आप कोलकाता विश्वविद्यालय के जैन दर्शन और प्राकृत विभाग के पूर्व प्रमुख प्रोफ़ेसर थे। आपके विश्व विद्यालय से अवकाश लेने के बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राकृत भाषा का विभाग बंद हो गया है। स्वर्गीय हरगोविंद दास टीकमचंद दोसी के समय कोलकाता विश्वविद्यालय में प्राकृत भाषा का विभाग प्रारंभ हुआ था जो प्रोफेसर सत्य रंजन बनर्जी के समय तक तीन पीढ़ियों तक अनवरत चला।

भिवानी चातुर्मास में सन् 2006 आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सानिध्य में आपको **जैन विश्व भारती लाडनू** द्वारा प्रदत्त एवं के बी डी फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित **'आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया था। सन 1989 में योगक्षेम वर्ष में आचार्य श्री तुलसी ने आपको प्राकृत भाषा के विशेषज्ञ विद्वान से संबोधित किया। योगक्षेम वर्ष में गुरुदेव तुलसी के इंगित पर आपने साधु साध्वियों कों प्राकृत भाषा का अध्यापन करवाया।

आप भारत की प्रतिष्ठित एशियाटिक सोसाइटी के सक्रिय सदस्य रहे। स्वर्गीय गणेश ललवानी के स्वर्गवास के पश्चात आपने जैन भवन द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी जैन पत्रिका **'जैन जर्नल'** का कुशल संपादन वर्षों तक किया। दिनांक 22 अक्टूबर 2016 को मानिकतला जैन दादाबाड़ी में **जैन जर्नल के स्वर्ण जयंती वर्ष** के अवसर पर प्रकाशित विशेषांक के लोकार्पण समारोह में आप विशेष रूप से उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में डॉक्टर मंजू नाहटा प्रधान वक्ता के रुप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में जैन दर्शन के विद्वान श्री श्रीचंद जी चौरड़िया को भी डा० बनर्जी से मिलने का अवसर मिला। वार्तालाप भी हुआ और डॉक्टर बनर्जी ने जैन दर्शन समिति द्वारा किए जा रहे जैनागम कोष विषयक कार्य की प्रगति की जानकारी ली। आपने लेश्या कोश, पुद्गल कोष एवं योग कोष आदि ग्रंथों की भूमिका (Foreword)भी लिखी। आप अनेक वर्षों तक तेरापंथी महासभा भवन के पुस्तकालय में जैन दर्शन एवं प्राकृत के अध्ययन हेतु आते रहे। प्रोफ़ेसर अरुण कुमार मुखर्जी के साथ आपने वर्षों तक लाडनूं एवं कोलकाता में समणियों, श्रावकों के प्राकृत, पाली आदि भाषाओँ के अध्ययन में अमूल्य योगदान दिया|

बनर्जी साहब जैन तेरापंथी भी नहीं थे लेकिन तेरापंथ के आचार्यो के प्रति असीम श्रद्धा का भाव था। आपके अनेको जैन मित्र थे। आपकी आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। जैन दर्शन समिति के आप मानद सदस्य थे। आप जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित **'श्री भिक्षु आगम कोश ग्रंथ'** (सन 1997 में प्रकाशित) के मुनि श्री दुल्हराजजी के साथ सलाहकार रहे (संपादक साध्वी विमल प्रज्ञा जी एवं साध्वी सिद्ध प्रज्ञा जी)।

आपका जीवन सरल एवं सादगीपूर्ण था। अस्वस्थता के बावजूद भी आप सदैव प्राकृत भाषा के विकास के प्रति जागरूक एवं चिंतित रहे।

जैन दर्शन समिति द्वारा जैनागम कोश संपादन के कार्य में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। जैन तत्व वेत्ता स्वर्गीय मोहनलालजी बांठिया एवं वर्तमान में जैन दर्शन के उद्भट विद्वान श्रीचंद चौरड़िया द्वारा किए जा रहे प्राकृत संस्कृत भाषा के आधार पर प्रकाशित ग्रंथों में अनेकों की आपने भूमिका लिखी थी। आप प्रायः कहा करते थे कि मैं जन्म से जैन नहीं हूं किंतु कर्म से मैं जैन हूं। जैन दर्शन समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री नौरतनमल सुराणा एडवोकेट, श्री गुलाबमल भंडारी एवं वर्तमान अध्यक्ष श्री हीरालाल सुराणा, मानद सचिव श्री सुशील कुमार जैन (चौरड़िया), सह-मंत्री श्री सुशील बाफना आदि ने डॉ बनर्जी द्वारा प्राकृत भाषा में किए गए कार्यों का स्मरण किया एवं उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

आप के निधन से देश ने प्राकृत भाषा के एक मूर्धन्य विद्वान को खो दिया है जिससे पूरे जैन अजैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। जैन दर्शन समिति परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक उर्द्ध्वारोहण की मंगल कामना साथ ही पारिवारिक जनों के प्रति हार्दिक संवेदना।

प्रेषक:

सुशील जैन

सुशील कुमार जैन (चौरड़िया), मंत्री
जैन दर्शन समिति, कोलकाता